एमएन बुच मेमोरियल लेक्चर सीरीज ...

निकालना होगा चंद मुठ्ठियों में बंद पैसा

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
patrika.com

भोपाल. आखिरकार कालाधन है कहां? देश के 75 फीसदी लोग तो कमाने-खाने और जैसे-तैसे गुजर-बसर करने में जिंदगी गुजार देते हैं। बाकी 25 में से 20 फीसदी की तिजोरी में कालाधन होगा, लेकिन कुछ खास नहीं। कालाधन तो चंद धन्ना सेठों और नेताओं के कब्जे में है। ऐसे ही लोगों ने देश की अर्थव्यवस्था को बंधक बनाकर रखा है। कालाधन खत्म करना है तो चंद मुठ्ठियों में कैद अर्थव्यवस्था को आजाद करना होगा। देश के प्रत्येक व्यक्ति की जेब में भरपूर पैसा होना चाहिए। ...और यह तभी होगा जब बिज़नेस फ्रेंडली नियमों को बदलकर मार्केट फ्रेंडली किया जाएगा। यह निष्कर्ष रहा 'अंडरस्टैंडिंग ब्लैक मनी इन इंडिया' विषय पर आयोजित कार्यक्रम का।

बुधवार को समन्वय भवन में

कार्यक्रम को संबोधित करते रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर वाईवी रेड्डी

आईएएस एमएन बुच की स्मृति में सेकेंड मेमोरियल लेक्चर सीरीज का आयोजन किया गया। जिसमें बतौर वक्ता रिजर्व बैंक के पूर्व गवर्नर वाईवी रेड्डी व कज्यूमर यूनिटी एंड ट्रस्ट सोसायटी के महासचिव प्रदीप मेहता शामिल रहे। यह कार्यक्रम द नेशनल सेंटर फॉर ह्यूमन सेटलमेंट एंड एनवायरमेंट (एनसीएचएसई) एनजीओ की ओर से कराया गया जिसकी चेयरमैन मप्र शासन की पूर्व मुख्य सचिव निर्मला बुच है। कार्यक्रम में मप्र शासन के प्रमुख सचिव एंटोनी डिसा, पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी समेत अन्य महत्वपूर्ण लोग उपस्थित रहे।

ब्लैक मनी का टैक्स चोरी से नाता नहीं

रिजर्व बैंक के पूर्व गर्वनर वाईवी रेड्डी कहा कि सरकार ने कालाधन घोषित करने के लिए योजना बनाई है। इस योजना में अभी तक ठंडा रिस्पांस मिला है। जितना भी कालाधन सामने आया है वह देश की जीडीपी का मात्र .45 फीसदी है। बहुत कोशिश करेंगे तो यह रकम दुगुनी-तिगुनी हो जाएगी। मतलब साफ है कि ब्लैक मनी का टैक्स चोरी से कोई लेना देना नहीं है। हमें ब्लैक मनी के सोर्सेज पर प्रहार करना होगा तब जाकर ही पैसा मार्केट में फ्लो करेगा

इलेक्शन फंडिंग ब्लैक मनी का सबसे बड़ा जरिया

कंज्यूमर यूनिटी एंड ट्रस्ट सोसायटी के महासचिव प्रदीप मेहता ने बताया कि ब्लैक मनी का सबसे बड़ा जरिया इलेक्शन फंडिंग है। सरकार ने अपने बजट में एनजीओ के साथ चुपके से इलेक्शन फंडिंग को भी फॉरेन

एक्सचेंज रेग्यूलेशन एक्ट (फेरा) के दायरे में रख दिया। चंद नेताओं व बिजनेसमैन ने ही अपनी ब्लैक मनी रियल इस्टेट, प्राइवेट मेडिकल फैसलिटी, प्राइवेट एजुकेशन में लगा रखी है। यहां से वो अपनी ब्लैक मनी को व्हाइट कर रहे हैं और हम टैक्स चोरों को डरा-धमका कर पैसा जमा कराने में लगे हैं यही कदम उन बिजनेसमैन और नेताओं के खिलाफ उठाया जाना चाहिए। दरअसल, कानून का पालन न कराना कानून बनाने से ज्यादा खतरनाक है।

कितना खर्च होता है आप ही बताएं कैलाश जी?

कार्यक्रम में पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी भी उपस्थित थे। 'पत्रिका' ने जब प्रदीप मेहता से सवाल करते हुए इलेक्शन फंडिंग में ब्लैक मनी को समझाने को कहा तो उन्होंने बताया कि एक कैंडीडेट लोकसभा चुनाव में 30 करोड़, विधानसभा चुनाव में 20 और पार्षद चुनाव में 5 करोड़ तक खर्च कर देता है, यह पैसा कहां से आता है? मेहता ने पूर्व सीएम से पूछा, आप ही बताएं कैलाश जी मैं सही कह रहा हूं न? इस पर जोशी ने कहा कि आप खर्च ज्यादा बता रहे है। इस पर मेहता ने कहा यह आपके समय का नहीं आज का खर्च बता रहा हूं।